[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 103 **D** **आपका अनुक्रमांक.....**

Unique Paper Code : 205181

Name of the Course : **B.Com. (बी. कॉम) / (Prog.)**

Name of the Paper : Paper CP1.4 – HINDI LANGUAGE (A)
प्रश्न-पत्र CP1.4 – हिन्दी भाषा (क)

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (3×3=9)

(क) दुलहिनीं गावहु मंगलचार।
हम घरि आए राजा राम भरतार।।
तन रसि करि मैं मन रति करिहौं पांचउ तत्त बराती।
राम देव मोरै पाहुनै आए मैं जोबन मैंमाती।।
सरीर सरोवर बेदी करिहौं ब्रह्मा बेद उचारा।
राम देव संगि भांवरि लेइहौं धंनि-धंनि भाग हमारा।।
सुर तैंतीसों कोटिक आए मुनिवर सहस अठासी।
कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं पुरिख एक अबिनासी।।

(i) उपर्युक्त पंक्तियों के कवि कौन हैं ?

(ii) 'मंगलचार' का क्या अर्थ है ?

(iii) 'राम देव संगि भांवरि लेइहौं' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

P.T.O.

(ख) जग है असार सुनती हूँ, मुझको सुख-सार दिखाता।
मेरी आँखों के आगे, सुख का सागर लहराता।
कहते हैं होती जाती, खाली जीवन की प्याली।
पर मैं उसमें पाती हूँ, प्रतिपल मदिरा मतवाली।

(i) उपर्युक्त पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं तथा इनका रचयिता कौन है ?

(ii) जीवन और जगत के प्रति रचयिता का दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए ?

(iii) 'प्रतिपल मदिरा मतवाली' से आप क्या समझते हैं ?

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (6)

पुरतें निकसी रघुबीर बधू धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकी, पुट सूखि गए मधुराधर वै ।।
फिरि बूझति है, चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै ?
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियां अति चारु चलीं जल च्वै ।।

अथवा

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिलखिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख, जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (3×3=9)

मुंशी जी के निबटने के पश्चात सिद्धेश्वरी उनकी जूठी थाली लेकर चौके की जमीन पर बैठ गई। बटलोई की दाल को कटोरे में उड़ेल दिया, पर वह पूरा भरा नहीं। छिपुली में थौड़ी-सी चने की तरकारी बची थी, उसे पास खींच लिया। रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया। उसमें केवल एक रोटी बची थी। मोटी-भद्दी और जली उस रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसारे में सोए प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया। उसने लड़के को कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जुठी थाली में रख लिया। तदुपरांत एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गई। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टप्-टप् आँसू चूने लगे।

(i) उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है और इसके लेखक कौन हैं ?

(ii) सिद्धेश्वरी कौन थी ? उसके कितने पुत्र थे ?

(iii) इस उद्धरण के आधार पर सिद्धेश्वरी की मनःस्थिति बताइए ।

अथवा

आनंदी ने लाल बिहारी की शिकायत तो की थी, लेकिन अब मन में पछता रही थी । वह स्वभाव से ही दयावती थी, उसे इसका तनिक भी ध्यान न था कि बात इतनी बढ़ जाएगी । वह मन में अपने पति पर झुँझला रही थी कि यह इतने गरम क्यों होते हैं । उसपर यह भय भी लगा हुआ था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलने को कहें, तो कैसे क्या करूँगी । इस बीच में जब उसने लाल बिहारी को दरवाजे पर खड़े यह कहते सुना कि अब मैं जाता हूँ, मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, क्षमा करना, तो उसका रहा-सहा क्रोध भी पानी हो गया । वह रोने लगी । मन का मैल धोने के लिए नयन-जल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ में से लिया गया है और उसके लेखक कौन हैं ?

(ii) आनंदी अपने पति पर क्यों झुंझला रही थी ?

(iii) आनंदी के मन का मैल कैसे दूर हुआ ?

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (6)

आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है । इस भाषा का निघण्टु शुद्ध श्वेत पत्रों वाला है । इसमें नाममात्र के लिए भी शब्द नहीं । यह सभ्याचरण नाद करता हुआ भी मौन है, व्याख्यान देता हुआ भी व्याख्यान के पीछे छिपा है, राग गाता हुआ भी राग के सुर के भीतर पड़ा है । मृदु वचनों की मिठास में आचरण की सभ्यता मौन रूप से खुली हुई है । नम्रता, दया, प्रेम और उदारता सब के सब सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान हैं । मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थायी होता है और उसकी आत्मा का एक अंग हो जाता है ।

अथवा

रात का काला-घुप्प परदा दूर हुआ, तब यह उच्छ्वसित हुआ सिर्फ उसलिए नहीं कि अब पेट-पूजा की समिधा जुटाने में उसे सहूलियत मिलेगी, बल्कि वह आनंद-विभोर हुआ, उषा की लालिमा से, उगते सूरज की शनैः शनैः प्रस्फुटित होने वाली सुनहली किरणों से, पृथ्वी पर चम-चम करते लक्ष-लक्ष ओसकणों से ! आसमान में जब बादल उमड़े तब उनमें अपनी कृषि का आरोप करके ही वह प्रसन्न नहीं हुआ । उनके सौन्दर्य-बोध ने उसके मन-मोर को नाच उठने के लिए लाचार किया, इन्द्रधनुष ने उसके हृदय को भी इन्द्रधनुषी रंगों में रँग दिया !

5. 'अरी वरुणा की शांत कछार' के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए। (8)

अथवा

पाठ्यक्रम में संकलित 'कबीर की साखियों' के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

6. 'हार की जीत' कहानी का सार लिखते हुए इसके उद्देश्य को विस्तार से समझाइए। (7)

अथवा

'विकलांग श्रद्धा का दौर' अपने समय और समाज की निर्मम आलोचना का प्रयास है', इस कथन की समीक्षा कीजिए।

7. (क) हिन्दी भाषा के विकास में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की क्या भूमिका थी ? स्पष्ट कीजिए। (5)

अथवा

एक अच्छे शब्दकोश की परिभाषा देते हुए, अच्छे शब्दकोश की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

(ख) किसी बैंक में परिवीक्षा अधिकारी (प्रोबेशनरी ऑफिसर) के पद हेतु आवेदन के लिए स्ववृत्त तैयार कीजिए। (5)

अथवा

कार्यालयी पत्र लेखन की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दस के हिन्दी प्रतिशब्द बताइए - (5)

Agent, Capital, Commerce, Consumption, Credit, Currency, Demand Letter, Dividend, Enclosure, Endorsement, Expansion, Export, Gross, Insurance, Mortgage

8. (क) एक अच्छे विज्ञापन के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए ? (5)

(ख) द्विभाषी कोश की विशेषताएँ बताइये। (5)

(ग) 'राजधानी दिल्ली: आकर्षण के बिन्दु' **अथवा** 'दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा का प्रश्न' विषय पर संक्षिप्त लेख लिखिए। (5)